सेवाभाव से प्रेरित पत्रकारिता
गांधी के विशेष संदर्भ में

नंदिनी हर्षदराय द्विवेदी
शोधार्थी, पत्रकारिता एवम् जनसंचार विभाग,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, (गुजरात)

डॉ. विनोद कुमार पांडेय
प्रोफेसर, पत्रकारिता एवम् जनसंचार विभाग,
गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद, (गुजरात)

सारांश:
महात्मा गाँधी का नाम लेते ही एक हाड़-मांस के पतले-दुबले व्यक्ति नजर के सामने आता है। जिसके बदन पर एक धोती, एक छड़ी, चश्मा और हाथ में अक्सर कागज और कलम। महात्मा गांधी को राष्ट्र बापू के नाम से सम्बोधित करता है। महात्मा गाँधी की पत्रकारिता में सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक, विषयों पर गम्भीर चर्चायें होती थी। गांधीजी एक प्रतिष्ठित पत्रकार थे। दक्षिण अफ्रिका में अपने प्रवास के दौरान वहाँ बसे अश्वेत भारतीयों के साथ अमानवीय व्यवहार को देखकर उनका मन बहुत द्रवित हुआ। वह यथास्थिति से लोगों को अवगत कराने के लिए उन्होंने इंडियन ओपिनियन नामक समाचार पत्र सेवाभाव से शुरू किया। उनकी आवाज बनने की कोशिश की जो पत्रकारिता का मूल धर्म सेवा था। महात्मा गांधी अखबार को विचारों को फैलाने का सबसे ताकतवर जरिया मानते थे। उन्होंने कभी भी पत्रकारिता को अपनी आजीविका का आधार बनाने की कोशिश नहीं की, उनका कहना था कि- "'पत्रकारिता कभी भी निजी हित या आजीविका कमाने का जरिया नहीं बनना चाहिए और अखबार या संपादक के साथ चाहे जो भी हो जाय, लेकिन उसे अपने देश के विचारों को सामने रखना चाहिए, नतीजे चाहे जो भी हों।" महात्मा गांधी एक मिशनरी पत्रकार थे और वे मिशन की सफलता के लिए पत्रकारिता एक अत्यंत सशक्त माध्यम है ऐसा समझते थे। गांधी को अपनी तेज-तरार एवं आक्रमक लेख के कारण सहन भी करना पड़ा| फिर भी पत्रकारिता धर्म को नहीं छोडा | उन्होंने 'नवजीवन', 'हरिजन' व 'यंग इंडिया' नामक विचारपत्रों का प्रकाशन किया| जिसमें विविध विषयों में सेवाभाव प्रकाशित किये| जिससे देश को नई दिशा मिली।

बीज शब्द :
गाँधी, पत्रकारिता, सेवा, सामाजिक, विचार, लोककल्याण।

प्रस्तावना:
""खुद को खोजने का सबसे अच्छा तरीका है, खुद को दूसरों की सेवा में खो दो।" –महात्मा गाँधी

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी एक राष्ट्रवादी नेता तथा सत्य और अहिंसा के पुजारी थे| भारतीय इतिहास में सन् 1919 से 1947 तक के युग को गाँधी का युग कहा जाता है| इसका कारण गाँधीजी ने राष्ट्रीय जागरण को राष्ट्रव्यापी बनाया बल्कि देश के सामाजिक सिद्धांतों की अमिट छाप छोड़ दी है और देश की भावी प्रगति के लिए एक मार्ग निर्धारित किया| मोहनदास करमचंद गांधी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व इतना बहुआयामी, बहुभाषी, बहुरूपी, बहु- क्षेत्रीय,

बहुराष्ट्रीय तथा बहुउद्देशीय था कि उस काल-खंड में उन जैसा कोई और व्यक्ति दिखाई नहीं देता (गोयनका, २०१६)| पत्रकारिता के प्रारंभिक दौर से लेकर अंतिम समय तक उन्होंने तन-मन और धन से भारतीय ही नहीं विश्व पत्रकारिता को उपकृत कर एक नई सोच और नई दिशा प्रदान की| निस्संदेह गाँधी और गाँधी के समय को जानने के लिए उनकी पत्रकारिता को जानना आवश्यक है| जब महात्मा गांधी के पत्रकारत्व के विषय में सोचा, स्मरण रहता है कि देश और काल की कसौटी पर, ईश्वरीय विश्वास और श्रम में अटूट श्रद्धा के साथ, बिना किसी को सताए अपने प्रयत्न को शोध बनाते जाना गांधीजी के पत्रकारत्व की विशेषता थी| विश्व में ऐसे कितने ही पत्रकार हैं, जिन्होंने यद्यपि किसी पत्र का संपादन नहीं किया है परंतु लोग उन्हें पत्रकार मान सकते हैं| समाज को समय की कसौटी पर कसने वाला कोई भी हो, वह पत्रकार कहलाने के उत्तरदायित्व से मुक्त नहीं हो सकता| किंतु महात्मा गांधी तो स्वयं 'यंग इंडिया', 'नवजीवन', 'हरिजन' और 'हरिजन-सेवक' का संपादन और प्रकाशन भी करते रहे| गांधीजी से महान संपादक कदाचित इस देश में पैदा नहीं हुआ| वे महज सुलझा देने की दृष्टि से किसी समस्या को नहीं पकड़ते थे| समस्या ढूंढना और सुलझाना, व्यावहारिक सतह पर सुलझाना उनकी जनसेवा की परंपरा का एक महान अंग बन गया था| इसीलिए उनके 'यंग इंडिया', 'हरिजन', 'हरिजन-सेवक' में प्रकाशित होने वाले लेखों को लोक प्रकाशित होते न होते अपने पत्रों में छाप दिया करते थे| इस देश के जनजीवन का उद्धार करने की दृष्टि से|

उदेश्य:

1. गांधीजी की पत्रकारिता का अध्ययन करना|
2. गांधी के सेवाभाव को जानना|
3. गाँधीजी द्वारा की गई पत्रकारिता में विविधता को पहचानना|

संदर्भ साहित्य का अध्ययन:

गाँधीजी ने अपनी आत्मकथा के 267 पृष्ठ में उल्लेख किया है कि – 'इंडियन ओपिनियन' के पहले महीने से कामकाज से ही मैं इस परिणाम पर पहुंच गया था कि समाचार पत्र सेवाभाव से ही चलाने चाहिए| समाचारपत्र एक जबरदस्त शक्ति है, उसी प्रकार कलम का निरंकुश प्रवाह भी नाश की सृष्टि करता है |

डॉ. सुधीर कुमार अपने आर्टिकल "धर्म और राजनीति पर महात्मा गांधी'' में गांधीजी के प्रिय भजन के लिए लिखा है की- "वैष्णव जन तेने कहिये जे पीर पराई जान रे...." यह गांधीजी का अनूठा भजन था, जिसके द्वारा यह स्पष्ट रूप से सिद्ध होता है कि गांधीजी का धर्म दूसरों की मदद करना, सेवाभाव और कल्याणकारी था|

काशी हिन्दू विश्व विद्यालय की रीडर डॉ. सुमन जैन अपने पुस्तक "गाँधी विचार और साहित्य'' के आमुख में अपनी और से लिखती है कि- "गांधीजी के लेखन में पत्रकारिता छलकती है| समाज की ऐसी कोई समस्या नहीं होगी, जहाँ उनकी कलम न चली| मूलतः गांधीजी पत्रकार हैं| संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा-वृतांत आदि अनेक विधाएँ उन्होंने अपनायीं (जैन, 2010)|"

समाजशास्त्री आनंद कुमार 'गांधीजी संवादी पत्रकार थे' इस लेख में वे कहते हैं, "एक पत्रकार के रूप में गांधीजी किसी भी तरह के दबाव से परे थे| उनकी पत्रकारिता भी नैतिकता और सत्य के आग्रह से संचालित थी| क्षेत्रीय भिन्नताओं के बावजूद उनके लिए न तो भाषाएं दीवार खड़ी कर सकीं और न ही वर्गीय दबाव, उन्हें ऐसा करने के लिए बाध्य कर सके|" आनंद कुमार अपने लेख में बताते हैं, "गांधीजी पाठक को अपना स्वामी मानते थे| एक पत्रकार के रूप में गांधीजी की विशेषता यह थी कि वे अपने स्वामी यानी अपने पाठकों को उनके दुर्गुणों से अवगत कराते थे, वे उनकी बुराइयों के बारे में बताने में जरा भी नहीं कतराते थे| जैसे- छुआछूत, बालविवाह, औरतों को न पढ़ाना, कोढ़ियों को उपेक्षित करना, यह सब समाज के दुर्गुण थे| लेकिन गांधीजी उस समाज के साथ संवाद करके उक्त समस्याओं का समाधान करते थे|" इससे दो बात निकलती हैं, पहली यह कि पाठकों के प्रति मीडिया की निष्ठा| दूसरी बात यह कि क्या पत्रकारिता समाज को उसकी बुराइयों से अवगत कराके उसके समाधान की दिशा में काम कर रही है या फिर पत्रकारिता पर एक दबाव काम कर रहा है कि वह सब कुछ अच्छा दिखाए (Essay, 2019)|

महात्मा गाँधी की पत्रकारिता का प्रारंभ:-

गांधीजी जब तक भारत में रहे थे तब तक उन्होंने शायद ही कोई पत्र पढ़ा हो| उनके मन में पत्रकारिता के अंकुर का प्रस्फुटन लंदन में हुआ| वहाँ वकालत की पढ़ाई के दौरान 'डेली न्यूज़', 'डेली टेलीग्राफ' और 'पाल माल गजेट' के प्रभावित होकर सन् 1888 ई. में वह 'लंदन वेजीटेरियन सोसायटी' के सदस्य बने| संस्था के पत्र 'दि वेजीटेरियन' के लिए उन्होंने दर्जन भर लेख लिखे| 'वेजिटेरियन' में उनका पहला लेख शीर्षक – 'इंडियन वेजीटेरियन' अर्थात् 'भारतीय अन्नाहारी' 7 फरवरी 1891 को प्रकाशित हुआ| दक्षिण अफ्रीका की राजनीतिक व्यवस्था की रिपोर्टिंग के लिए उनको वेजिटेरियन का प्रतिनिधि नियुक्त किया| यह गांधीजी की पत्रकारिता की शुरुआत थी|

तीन घटनाओं ने गांधी को किया लिखने को मजबूर किया :-

दक्षिण अफ्रीका में तीन घटनाएं घटीं, जिनमें उन्हें मारा पीटा और अपमानित किया गया था| इन्हीं घटनाओं ने उनकी लेखकीय प्रतिभा को जगाया| 1993 की वह प्रसिद्ध

घटना थी, प्रीटोरिया रेलवे स्टेशन पर प्रथम श्रेणी का टिकट लेकर ट्रेन में बैठे ही थे कि उन्हें धक्का देकर गाड़ी से नीचे उतार दिया गया| दूसरी घटना प्रेसीडेंट क्रूगर के निवास के पास पैर की ठोकरें मारी गई| तीसरी घटना 1897 की थी, जब वे भारत से डरबन पहुँचे थे, तो गोरों की भीड़ ने उन पर हमला किया| तीनों बार वे रंगभेद के शिकार हुए थे| बार-बार अपमानित होना उन्हें कुली, कुली-बैरिस्टर कहते थे, ये उनका अपमान नहीं लेकिन सभी काले लोगों का अपमान था| यह काले-गोरे का यह भेदभाव और अपमान गांधीजी को बुरी तरह चुभा था, इस पर गंभीरता से विचार कर रहे थे और इसीलिए उनका लेखन उनकी पीड़ा की अभिव्यक्ति बन गया|

सफल पत्रकार : महात्मा गांधी:-

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के अनेक रूप हैं- सेवाधारी, राजनेता, देशभक्त, समाज-सुधारक, सांप्रदायिक एकता के अग्रदूत, अस्पृश्यता निवारण के मसीहा थे और वह पत्रकार भी थे| गांधीजी ने समय के प्रति अपने सेवाभाव को अपनी विचारधाराओं को संवाद रूप में अपने पत्रों के माध्यम से अभिव्यक्त किया| महात्मा गांधी के पत्रकार रूप का महत्व कम नहीं है, बल्कि यह कहने में मुझे कोई संकोच नहीं है कि गांधी को महात्मा बनाने में उनकी पत्रकारिता को सबसे अधिक श्रेय मिलना चाहिए| गांधीजी का पत्रकारात्व बहुत आयामी था| पत्रकार के रूपमें गांधीजी ने देश को जागृत्त किया| जन-जन में राष्टवाद फैलाया, ग्रामोत्थान की बातें की, खादी का प्रचार-प्रसार किया, कोई भी विषय ऐसा नहीं था जो पत्रकार के रूप में नहीं लिखा हो|

दक्षिण अफ्रीका में 3 वर्ष तक गांधी वकील से अधिक पत्रकार के रूप में लोकप्रिय थे| वहां के समाचार-पत्रों के सम्मानित स्तंभकार थे| उन्होंने अक्टूबर, 1899 में स्वतंत्र पत्रकार के रूप में बोअर युद्ध मैदान में जाकर 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के लिए समाचार भेजे थे| 'प्रिटोरिया न्यूज़' के संपादक मि. विअर स्टेट ने गांधी द्वारा युद्ध स्थल से भेजी गई रपटों और चित्रों का प्रकाशन किया था| दक्षिण अफ्रीका में महात्मा गांधी ने सन् 1903 में 'इंडियन ओपिनियन' आरंभ किया और वे जब तक वहाँ रहे, इस समाचार-पत्र को निकालते रहे| जब भारत आए तो उन्होंने 'नवजीवन', 'यंग इंडिया' तथा 'हरिजन' का संपादन-प्रकाशन किया और इस प्रकार लगभग 4 दशकों तक पत्रकारिता से सीधे रुप से जुड़े रहे| गुजरात से सन् 1919 में प्रकाशक महादेव देसाई और मुद्रक शंकरलाल बैंकर के सहयोग से अंग्रेजी में सप्ताह की शुरुआत की| एक ही वर्ष में यह पत्र असहयोग आंदोलन का प्रमुख पत्र बन गया|

गांधी के चिंतन और विचारों का संसार कितना बड़ा है| वे जान चुके थे कि करोड़ों पाठकों, चिंतकों एवं स्वतंत्रता प्रेमियों तक समाचार-पत्र के माध्यम से ही पहुंचा जा सकता है| उन्होंने अपने कार्यक्रमों तथा विचारों को प्रसारित तथा प्रचारित करने के लिए सदैव ही समाचार-पत्रों का सहारा लिया| वे समाचार-पत्र के महत्व को जानते थे तथा उनकी शक्ति को पहचानते थे, इसी कारण उन्होंने समाचार पत्रों का संपादन प्रकाशन किया तथा लगभग 4 दशकों तक पत्रकार की भूमिका निभाई|

गांधीजी बताते है कि – "पत्रकारिता मुख्य ध्येय होना चाहिए सेवा| पत्र का उद्देश्य यह भी होना चाहिए कि लोग-भावना को समझकर उसकी अभिव्यक्ति की जाए| पत्रकारिता लोकमत बनाने का एक साधन है| मैंने तो अपने जीवन के ध्येय की पूर्ति के लिए एक साधन के रूप में पत्रकारिता को अपनाया है, पत्रकारिता के लिए नहीं| पत्रकारिता एक सुंदर कला है| पर आजकल उसका दुरुपयोग बहुत होता है| निश्चय ही यह एक शक्ति है, पर इस शक्ति का बुरा इस्तेमाल एक अपराध है (गाँधी, २००३)|

गाँधी की पत्रकारिता:-

स्वाधीनता के संघर्ष में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की पत्रकारिता का वर्णन भारत की वर्तमान पीढ़ी के समक्ष अधिक रेखांकित नहीं हुआ है। उनकी पत्रकारिता उनके इंग्लैड प्रवास के समय ही आरम्भ हो गई थी जब उन्होने शाकाहार आन्दोलन के लिये वेजिटेरियन पत्रिका में लेख लिखा था। उन्होने इंडियन ओपिनियन समाचार-पत्र निकाला जिसमें उन्होने पत्रकारिता के उद्देश्य को स्पष्ट किया। उनका कहना था कि जन-भावनाओं को जाग्रत करना पत्रकारिता का सर्वाधिक महत्वपूर्ण उद्देश्य है और दमन का मुकाबला लेखनी ही कर सकती है। अपने जीवन के संघर्ष के दिनों में उन्होंने पत्रकारिता की निर्भीकता का महत्व बराबर बनाये रखा। भारत आने पर उन्होने पत्रकारिता को और अधिक मुखरित किया और इस क्रम में कई पत्र निकाले जिसमें 'यंग इंडिया', 'हरिजन', 'नवजीवन', 'बाम्बे क्रानिकल' विशेष रूप से उल्लेखनीय रहा है। गांधीजी की पत्रकारिता के सम्बन्ध में विशेष रूप से उल्लेखनीय बात सत्य की अभिव्यक्ति थी। विश्व प्रसिद्ध 'कल्याण' पत्रिका निकालने से पूर्व श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी जब महात्मा गांधी से आशीर्वाद लेने पहुँचे गांधी जी ने उन्हें सुझाव दिया कि पत्र के स्तर और स्वरूप की रक्षा के लिये दो बातें आवश्यक हैः पहली पत्रिका में विज्ञापन मत छापना। दूसरी पुस्तक समीक्षा प्रकाशित नहीं करना।

गाँधी के व्यक्तित्व के विविध पहलुओं से भारतीय जनमानस आप्लावित रहा है| गांधीजी ने 'नवजीवन', 'यंग इण्डिया', 'हरिजन' जैसे पत्रों का प्रकाशन किया और इसके माध्यम से एक अलग प्रकार की पत्रकारिता की नींव भी रखी| जिससे समाज में सेवा का सन्देश पहुँचाया गया| इस शोधपत्र के माध्यम से गाँधी के सेवाभाव के विचारों का रेखाचित्र यहाँ प्रस्तुत किया है| शोधपत्र का हेतु गाँधी की सेवा के विचारो का अध्ययन करना है| गांधीजी का पत्रकारात्व की विशेषताओं को उजागर करना भी शोध का लक्ष्य है| यह शोध कार्य

पत्रकारिता के द्वारा गांधी की सेवा के दृष्टिकोण को समझने का प्रयास भी है|

पत्रकारिता में गांधी का सेवा स्वरूप:-

सन् १८८३ में गांधी जब अफ्रीका गए| तब डरबन में भारतीयों को मताधिकार से वंचित कराए जाने की घटना से क्षुब्ध होकर वहां रह रहे भारतीयों को मत का अधिकार दिलाए जाने के संबंध में उनके 8 लेख लंदन के 'टाइम्स' ने प्रकाशित किए| वह आँखों देखे गिरमिटिया शोषण, अपमान और प्रताड़ना के दृश्यों ने उनके मन में मानवता के ऐसे बीज बोए, जिनका प्रस्फुटन अफ्रीका से प्रकाशित 'प्रिटोरिया न्यूज़', 'नेटाल मरकरी', 'नेटल एडवरटाइजर' में चली लेखनी के द्वारा हुआ| गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका के डरबन, जोहान्सबर्ग शहरों से 'इंडिया' पत्र का प्रकाशन किया| गांधीजी ने दक्षिण अफ्रीका के डरबन, जोहान्सबर्ग शहरों से 'इंडिया' के संवाददाता नियुक्त होकर वहाँ चल रहे मानव संघर्ष को निर-क्षीर निर्णय की तरह उजागर किया| 1899 ई. में गांधीजी ने स्वतंत्र पत्रकारिता आरंभ की| बोअर युद्ध मैदान में जाकर उन्होंने हताहत सैनिकों की सेवा ही नहीं की बल्कि 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के लिए रिपोर्टिंग भी की| अंग्रेजी पत्रों ने भी युद्धभूमि पर उनके चित्रों और रपटों को प्रकाशित किया| वह दुनिया के पहले रिपोर्टर थे जिन्होंने वर्णनात्मक पत्रकारिता की नीरसता को तोड़कर संवेदनशील दृष्टिकोण से युद्ध कथा की रिपोर्टिंग की| उनकी रिपोर्टिंग स्किल से प्रभावित होकर 'केपटाइम्स' अखबार ने गांधीजी के संदर्भ में लिखा- "भारतीय जहां भी जाता है, काफी अच्छा और उपयोगी काम करता है (शर्मा, २०१३)|"

1893 से 1914 तक दक्षिण अफ्रीका में उन्होंने बदलाव लाने के लिए जो कुछ लिखा, उसका मतलब था सारे भारतीय समुदाय में एकता और सौहार्द कायम करना| दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों का एक ऐसा समूह जिसमे कोई आपसी तालमेल नहीं था| अतः वे वहां के मुस्लिम व्यापारियों, पश्चिम भारत के अपने हिंदू और पारसी मूवक्किलों, मद्रास से आए गुलाब मजदूरों और अफ्रीका नेपाल में पैदा हुए भारतीय ईसाइयों में मैत्री की भावना पैदा करना चाहते थे, लेकिन यह कोई सरल काम नहीं था| वहाँ की स्थिति बड़ी विकट थी| उसे एक रचनात्मक मोड़ देने के लिए उन्होंने कानूनी स्मरण पत्र, रिपोर्ट और स्थिति सुधारने के उपायों के ऊपर लिखा|

अपने पाठकों को प्रेरित और प्रोत्साहित भी किया| गांधीजी के लिए लेखन एक साधन था| लेखन उनके व्यावहारिक उपायों की खोज का साधन था| जो हिंदुओं, मुसलमानों, सिक्खों, जैनों, ईसाईयों और बौद्धों को भाई-भाई की तरह रहने में मदद करें| गांधीजी मात्र लेखक नहीं कर्मयोगी भी थे (जोशी, २०१०)|

महात्मा गाँधी की पत्रकारिता ने देश के स्वराज आंदोलन राष्ट्र-भाव के विकास तथा राष्ट्रीय जागरण में महत्वपूर्ण योगदान किया, जिसके सबंध में पंडित माखनलाल चतुर्वेदी ने कहा कि –"गाँधी से महान संपादक कदाचित इस देश में पैदा नहीं हुआ| जिस दिन हमने गाँधी को खोया, उसी दिन सारी पत्रकारिता देश-भक्ति के धर्म से हटकर राजनीतिक का जकड़-व्याल हो गई|"

समस्याओं के साथ महात्मा गांधी का जन्म कौन सा रिश्ता था कि वे अपने सारे वातावरण की समस्याएं उठाते और उन्हें सुलझाने बैठ जाते| आश्रम में हो या पहाड़ पर, स्थिर हों, या यात्रा में, प्रार्थना में हों या परिचय के क्षेत्र में, गांधीजी का नाम गांधीजी है ही, जो जीवन के प्रत्येक क्षण, समस्याओं को सुलझाने में लगे रहें|

सेवा की प्रतिमूर्ति गांधीजी:-

अफ्रीका प्रवास के दौरान 3 वर्षों में उन्होंने वकील से ज्यादा पत्रकार के रूप में अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया| उन्होंने 'ग्रीवीएंस ऑफ ब्रिटिश इंडियन इन साउथ अफ्रीका' नाम की हरे रंग की पुस्तिका जिसे 'हरि पोथी' अर्थात् ग्रीन पैम्फलैट कहा गया, प्रकाशित की, जिस पर इलाहाबाद के 'पायोनियर', मद्रास के 'मद्रास स्टैंडर्ड' और 'इंग्लिशमैंन' आदि पत्रों ने टिप्पणी प्रकाशित की| हरी पोथी में नेटाल में भारतीयों के साथ होने वाले दुर्व्यवहार का आंखों देखा वर्णन प्रस्तुत किया गया था| गांधीजी पुनः अफ्रिका गए तब अफ्रीका में भारतीयों के साथ होने वाली घटनाओं और व्यवस्था के विरोध में देश के तत्कालीन स्थापित पत्रों में खुलकर लिखा| संपादकों ने उन्हें सहयोग किया तो कुछ ने उन्हें अपने दफ्तरों में घटों बिठाए रखने पर भी उनसे बात तक नहीं की|

दक्षिण अफ्रीका में भारतीयों की स्थिति को मजबूत बनाने के लिए 'नेटाल इन्डियन कांगेस' की स्थापना की| इंटरनेशनल प्रिंटिंग प्रेस से 4 जून 1903 को 'इंडियन ओपिनियन' का प्रथमांक अंग्रेजी, हिंदी, गुजराती और तमिल में निकाला गया| शनिवार को चार पृष्ठों में निकलने वाले इस पत्र के महत्वपूर्ण स्तंभ गांधीजी ही तैयार करते थे| जनमत को शिक्षित करना, यूरोपीयन और भारतीयों के बीच गलतफहमी को दूर करना इसका उद्देश्य था| प्रथम अंक में उन्होंने पत्र के उद्देश्य के संबंध में लिखा था- "भारतीय लोगों पर हुए अत्याचार को प्रदर्शित करना तथा विचारों का प्रसार करना इसका पहला उद्देश्य है जिससे लोगों में सत्यनिष्ठा जागृत हो सके|" गांधीजी मानते थे कि जनमत को जगाने के लिए पत्र ही सबसे बड़ी ताकत है 'इंडियन ओपिनियन' को सर्वोदय और सत्याग्रह का प्रचारक बनाकर उन्होंने हिंसात्मक पत्रकारिता की मिसाल प्रस्तुत की| आर्थिक खर्चो और विपरीत परिस्थितियों का सामना कर गांधीजी ने 'इंडियन ओपिनियन' को चलाया| इसके लिए अपने अंतिम प्रवास की कमाई 5000 पाउंड खर्च कर दी|

नवजीवन में जनजागृति, सामाजिक सुधारणा, कुरीतियों के सामने आवाज़, गरीबो का आवाज उठाना,

महिलाओ को सक्रिय करना, आंदोलन-स्वतंत्रता संग्राम के लिए लोगों को तैयार करना ऐसे समय प्रति समय विचारपत्र के माध्यम से लोगों का ध्यान खींचते थे| गांधीजी के लेखन में पत्रकारत्व के बदले लोकसेवा का भाव था| 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' को उन्होंने अपनी नीति और सिद्धांतों का वाहक बनाकर गाँव-गाँव में देश की आजादी के लिए जन-जागरण की अलख जगाने में योगदान दिया| सन् 1919 में अंग्रेजों के रोलेट एक्ट के विरोध में मुंबई से पंजीकृत साप्ताहिक 'सत्याग्रही' का प्रकाशन आरंभ किया| 4 फरवरी 1932 को 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' के बंद हो जाने के बाद गांधी ने पुणे से साप्ताहिक 'हरिजन' का प्रकाशन प्रारंभ किया| 'हरिजन' के माध्यम से उन्होंने पूरे देश में हरिजन उत्थान का कार्य कर भारतीय दलित और उत्पीड़ित समाज को एक दिशा प्रदान करने में सक्रिय भूमिका का निर्वाह किया|

गांधी पत्रकारिता में विविधता:-

पत्रों में प्रकाशित गांधीजी के लेखों के विषय विविधता लिए हुए होते थे| एक विषय को लेकर वह कभी थमें नहीं| एक के बाद एक आलेखों के विषय भी भिन्न होते थे| इस संबंध में सुप्रसिद्ध विदेशी पत्रकार लुई फिशर ने कहा था- "एक लेख में गांधी भारत के लिए कैसी आजादी चाहिए इसकी व्याख्या करते थे और दूसरे में मिठाई बनाने के लिए दी जाने वाली चीनी के राशन में कमी की मांग करते थे| तीसरे में अपराध और अपराधियों की समस्या पर विचार करते और चौथे में यह आशा प्रकट करते थे कि स्वतंत्र भारत में सेनाएँ रखने के बारे में नियंत्रण से काम लिया जाएगा| पांचवे में वह यह फैसला करते हैं कि झूठ बोलना किसी भी अवस्था में उचित नहीं हो सकता और सत्य बोलने में किसी अपवाद की स्वीकृति की गुंजाइश नहीं|" एक और जहाँ वे वाइसराय को चुनौती का पत्र लिखते थे, तो दूसरी और लोक-जीवन के साथ विवाह, धर्म-अधर्म, हिंसा-अहिंसा, हरिजनोंद्धार, खादी ग्रामद्योग शिक्षा, चरखा, भाषा और गौ-रक्षा आदि प्रसंगों की भी चर्चा करते थे| जिन चर्चाओं का समाचार-पत्र में अथवा उनके समाचार-पत्र में आना संभव ना होता था, उनको अपनी व्यक्तिगत भेटों तथा चिट्ठी-पत्री के द्वारा व्यक्त करते थे|

निष्कर्ष :-

गांधीजी की पत्रकारिता के संबंध में प्रस्तुत आलेख के विभिन्न बिंदुओं से स्पष्ट है कि विपरीत परिस्थितियों में गांधीजी ने पत्रकारिता के क्षेत्र में जो कार्य किया वह आज भी अविस्मरणीय है| उनके पत्रकारिता के सिद्धांत वर्षों बाद आज भी प्रासंगिक हैं| यदि देश में पत्रकारिता के संक्रमण काल में आज के पत्रकार उनकी संपादन नीतियों और समीक्षक वृत्ति का अनुपालन करें तो देश की दिशा और दशा बदल सकती है|

इस शोधपत्र से जो बात सामने आई है, कि गांधीजी का मूल व्यवसाय पत्रकारत्व नहीं था किन्तु वे महान पत्रकार और संपादक थे| महात्मा गाँधी की पत्रकारिता सेवा और जनजागृति की लिए ही था| एक पत्रकार के नाते से सत्य के साथ रहना, सभी सबूतों के साथ सूचनाएं पाठको को देना, कार्य के प्रति इमानदार रहना जेसे सभी गुण गांधीजी में थे| गांधी का समाज और लोगों की सेवा ही पत्रकारिता का लक्ष्य था। गांधी द्वारा निर्धारित पत्रकारिता का एकमात्र उद्देश्य था कि कोने-कोने तक जनता को हर बात की सूचना मिले, जनता जागृत हो जाए| समस्या अथवा घटना चाहे उड़ीसा की हो, चाहे दिल्ली की, चाहे बंगाल की हो, चाहे तमिल, तेलुगू यह मलय देश की, उत्तर प्रदेश की हो, चाहे मध्य प्रदेश की, गांधी उन समस्याओं अथवा घटनाओं का अपने छोटे से साप्ताहिक में केवल उल्लेख मात्र ही नहीं करते थे, किंतु उन पर अपना मत भी दिया करते थे| शोध में निम्न लिखित बिन्दु पाए गए|

निष्कर्ष रूप में हम कह सकते हैं कि महात्मा गांधी पत्रकारिता के माध्यम से देश सेवा कर रहे थे | वे एक निडर,निष्पक्ष ,गरीबों और शोषितों के उद्धारक रूप में हमारे समक्ष आते हैं | जिन्होंने तत्कालीन समय की विविध विषयों पर अपनी लेखनी चलाकर युवाओं को जागृत और सचेत करने का प्रयत्न किया,वे एक सच्चे समाज सुधारक थे जहाँ उन्होंने पत्रकारिता को अपने अभियान में साधन रूप में इस्तेमाल किया | उनकी पत्रकारिता की भाषा सरल, सहज और सुबोध थीं | उन जैसा सच्चा और अपने कर्म के प्रति निष्ठा रखने वाला अब विरले हैं |

सन्दर्भ सूची:-

1. गाँधी, म. क. (२००३). गांधीजी की सूक्तियां (२०१० ed.). (ठ. र. सिंह, Ed.) नई दिल्ली: हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा. लिमिटेड.
2. गोयनका, क. क. (२०१६). गाँधी: पत्रकारिता के प्रतिमान. नई दिल्ली: सस्ता साहित्य मण्डल.
3. चोपड़ा, ड. ज. (२००८). भारतीय पत्रकारिता पर एक नजर (1st ed.). नई दिल्ली: सुमित एन्टरप्राइजेज.
4. जैन, ड. स. (२०१०). गाँधी विचार और साहित्य (Vol. 1st). नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
5. जोशी, ड. ब. (२०१०). गाँधी विचार और साहित्य (1st ed.). (ड. स. जैन, Ed.) नई दिल्ली: वाणी प्रकाशन.
6. शर्मा, न. क. (२०११). स्वत्रंता संग्राम और पत्रकारिता (1st ed.). नई दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन.
7. शर्मा, स. (२०१३). सर्वोदय और सत्याग्रही पतकरिता के प्रणेता:महात्मा गाँधी. गवेषणा , 1st (१०१), १५१.
8. सिंह, र. (2019, Feb 2). गांधी की पत्रकारिता. (आ. कुमार, Editor, & लोकनीति केंद्र, प्रज्ञा संस्थान, नई दिल्ली) Retrieved Feb 26, 2021, from https://satyagrah.scroll.in: https://satyagrah.scroll.in/article/124774/book-review-gandhi-ki-patrakarita